द्वितीय अध्याय

नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी के व्यक्तित्व एवं साहित्य सृजन

भारत अपने विविध सांस्कृतिक विरासत एवं समृद्धि के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है । भारतीय मिथक में ऐसे धार्मिक और सांस्कृतिक कहानियाँ शामिल हैं, जिसकी परिवर्तित रूप पीढ़ी दर पीढ़ी एक पैतृक संपत्ति की तरह हमें प्राप्त होता है । नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी जैसे लेखक इस संपत्ति को हासिल करने की यात्रा में हमारी मार्गदर्शक बनते हैं ।

मिथक को अक्सर काल्पनिकता या सत्य के साथ जोड़कर इतिहास के कोई अतिरंजित पक्ष ठहराने का प्रयत्न सदैव होता है । किंतु इस बात के लिए एक अपवाद स्वरूप हर काल में एक ऐसे लेखक हमारे समक्ष आया है जो मिथक को उसके उत्कृष्ट रूप में अपने कागज़ पर उतारने में सफल हुए हैं । नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी इस बात का सबसे बड़े जीता जागता सबूत हैं । नरेंद्र कोहली और अमीश त्रिपाठी भारतीय साहित्य की दो ऐसे अनमोल रत्न है, जिन्होंने नष्ट होती मिथकीय कथाओं और पौराणिक मूल्यों को वापस समाज एवं जनता से जोड़ा है । इनकी मिथकीय रचनाएँ पौराणिक होने के साथ-साथ प्रासंगिक भी हैं ।

2.1 नरेंद्र कोहली – व्यक्तित्व एवं साहित्य सृजन

नरेंद्र कोहली भारत के उन प्रमुख लेखकों में से एक हैं जिन्होंने मिथकीय रचनाओं को नई पहचान प्रदान किया। मिथक को इतिहास मानने वाले लोग, मिथक को साहित्य मानने वाले लोग, मिथक को सच मानकर उस पर विश्वास करने वाले लोग, मिथक को झूठ एवं मानगढ़त मानने वाले लोग, हर कोई इनके रचनाओं का रसास्वादन कर सकते हैं । मिथक की ओर यह एक नया कदम है, जिसे पाठक ने अपने दोनों हाथों से स्वीकारा है जो उनकी रचनाओं की सफलता के कारण बना। नरेंद्र कोहली एक उपन्यासकार होने के साथ-साथ एक कहानीकार, नाटककार, निबंधकार एवं एक व्यंग्यकार भी थे। अपने मिथकीय एवं पौराणिक रचनाओं की सहायता से उन्होंने आधुनिक भारत की समस्याओं को समाज के समक्ष लाने का प्रयत्न भी किया है ।

कोहली जी बचपन से ही लेखन में रुचि रखते थे। किंतु नियमित रूप से लेखन कार्य की शुरुआत 1960 में किया। कहानी, नाटक, उपन्यास सब मिलाकर कोहली जी के लगभग सौ किताबें प्रकाशित हुई है । उनकी जैसे प्रयोगता और विविधता और

कहीं देखने को नहीं मिलता। उन्होंने इतिहास और पुराण की कहानियों को आधुनिक परिपेक्ष्य में देखा और बेहतरीन रचनाएँ लिखी।

नरेंद्र कोहली का जन्म 6 जनवरी 1940 ई को स्यालकोट में हुआ था जो विभाजन के पश्चात अभी पाकिस्तान में स्थित है। उनकी माता का नाम विद्यावती है । उनका जन्म कृषक परिवार में हुआ था। इनके गाँव में शिक्षा की अव्यवस्था के कारण विद्यावती जी निरक्षर थे। 1992 में उनकी मृत्यु हुई। नरेंद्र कोहली के पिता का नाम परमानंद कोहली था। बचपन में आँखों के रोग आने के कारण परमानंद जी को अपनी शिक्षा सातवीं में रोकना पड़ा था। साहित्य में रुचि होने के कारण पुस्तकों और पत्रिकाओं की दुकान संभालते थे। किंतु साहित्य के प्रति उनकी प्यास मिटाने में नाकामियाब रहा तो इन्होंने कुछ कहानियाँ लिखी जिनमें कुछ दैनिक समाचार में प्रकाशित भी हुआ था। अंग्रेज़ अधिकारियों के नीचे अस्थाई क्लर्क की नौकरी भी इन्होंने किया। किंतु उच्च शिक्षा की अभाव के कारण वे अधिक समय उस पद में सेवा नहीं कर पाए। जीवन वृत्ति के लिए वह अपने गाँव सियालकोट वापस आ गए और एक छोटा सा दुकान खोला। 1985 में उनकी देहांत हुई।

- **शिक्षा** – छः साल में 'देवसमाज हाईस्कूल' लाहौर से उनकी शिक्षा आरंभ हुई। उसके बाद सियालकोट के गंड़ सिहं हाई स्कूल में कुछ समय तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात 1942 में देश विभाजन के कारण उन्हें शहर बदलना पड़ा। वे हमशदपुर में आकर रहने लगे। कोहली जी को बाद में 'धतकिड़ीह लोवर प्राइमरी गर्ल्स स्कूल' में भर्ति कराया गया। लड़कियों के स्कूल होने पर भी लड़कियों की संख्या बहुत कम होने के कारण लड़कों को भी प्रवेश मिलता था। चौथी से सातवीं कक्षा (1949 – 1953) तक 'न्यू मिडल इंग्लिश स्कूल' से और आठवीं से बारहवीं कक्षा (1953 – 1957) तक जमशेदपुर के 'मिसेज्. के एम. पी हाई स्कूल' से शिक्षा प्राप्त किया। वे कक्षा में सदैव प्रथम आते थे। यहाँ कोहली जी उर्दु के माध्यम से शिक्षा प्राप्त किया और अंग्रेजी भी सीखा। 1957 में यहाँ से उन्होंने मैट्रिक परीक्षा पास की। विशेषकर विज्ञान का अध्ययन भी यहाँ से किया। कोहली जी के परिवार आर्थिक रूप से सक्षम ना होने के कारण उन्हें अपनी पढ़ाई जमशेदपुर के ही 'ऑपरेटिव कॉलेज' में जारी किया। अनिवार्य अंग्रेजी, अनिवार्य हिंदी, मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र और विशिष्ट हिंदी जैसे विषयों का अध्ययन उन्होंने वहाँ से किया। 1963 ई में 'रामजस कॉलेज' में एम. ए किया और यहीं से 1970 में उन्होंने पी.एच.डी की उपाधि भी प्राप्त की। कोहली जी स्कूल और कॉलेज की शिक्षा के दौरान वाद विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेते थे और जितते भी थे। किशोर दल संस्था द्वारा आयोजित

प्रतियोगिता में अव्वल आए और सर्वश्रेष्ठ वक्ता की पुरस्कार भी प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने बिहार विश्वविद्यालय के द्वारा हिंदी और उर्दू भाषा के संबंध में आयोजित की गयी प्रतियोगिताओं में भी वे विजय हुए।

- **आजीविका –** डी. ए. वी कॉलेज में अपना पहला साक्षात्कार उत्तीर्ण करके महीने तीन सौ रूपये वेतन में उस कॉलेज में असिस्टेंट लेक्चरर के रूप में नियुक्ति हुई। दो वर्ष बाद असिस्टेंट लेक्चरर से लेक्चरर बन गए। 1965 में उन्होंने सांध्य कॉलेज छोड़कर दिल्ली के मोतीलाल नेहरु कॉलेज में नियुक्त हो गए। 1995 में वे जब पचास साल के हो गए, तब वे स्वेच्छिक सेवानिवृति लेकर नोकरी छोड़ दी और तब से अपने मृत्यु तक लेखन कार्य सृजना में लग गए।
- **परिवार –** नरेन्द्र कोहली ने 9 अक्टूबर 1965 में अपनी प्रेमिका डॉ मधुरिमा से विवाह किया। डॉ मधुरिमा ने पहले दिल्ली विश्वविद्यालय से पी. एच. डी की उपाधि प्राप्त किया और उन्होंने दिल्ली के ही मॉडर्न कॉलेज में असिस्टेंट लेक्चरर के पद पर काम किया। बाद में वे रीडर बन गयी। परिजीत, दूसरे कमार के निषेध जैसी कहानियों की रचना उन्होंने कोहली जी के साथ में किया है । नरेन्द्र कोहली और मधुरिमा जी के चार संतान थे। पहली बेटी संचीता का जन्म 1966 में हुआ किन्तु चार महीने की पश्चात उस बच्ची की मृत्यु हो गयी। 1967 ई में उन्हें फिर से जुडवा बच्चे हुए, एक लड़का और एक लड़की। किंतु छः दिन बाद दोनों को पॉलियो हुआ। उनकी चिकित्सा केलिए उन्हें आयुर्विज्ञान संस्थान में ले गए। किंतु बच्ची को बचा नहीं पायी। उन्होंने लड़के का नाम कार्तिकेय रखा। वह बच्चा भी पूरे साल बीमार रहा। 1975 में उनको एक और पुत्र हुआ जिसका नाम कोहली जी ने अगस्त्य रखा।

अपनी पुत्रियों को खोने के गम को कोहली जी की ह्रदय थी। उनकी मन में एक बेटी की इच्छा थी और बेटी न होने का दुःख उनमे हमेशा छायी रहती थी।

2.1.1 नरेंद्र कोहली का व्यक्तित्व

आधुनिक हिंदी साहित्य के सबसे प्रमुख लेखकों में से एक नरेंद्र कोहली एक अनुपम व्यक्तित्व के मालिक थे। उनका स्वभाव शिष्ट एवं विनय पूर्णता थे। शोषित वर्ग के लिए उनकी ह्रदय में सहानुभूति थी। इसके साथ वे एक प्रबल अध्यापक भी थे।

कोहली जी जीवन को उसकी महत्ता एवं गंभीरता के साथ जीने की कला जानते थे। जीवन की हर छोटी से छोटी पल को भी महत्वपूर्ण मानते थे तथा जीवन की सादगी, प्रफुललता एवं उसकी वास्तविकता पर विचार करते थे। जीवन की लक्ष्यों के प्रति उनमें जो प्रतिबद्धता थी वह उन्हें अपने लक्ष्यों को साकार बनाने के लिए प्रोत्साहित करते थे।

लक्ष्य के प्रति महसूस करने वाली जोश एवं सौहार्द कभी कम नहीं हूई। हिंदी के सबसे प्रमुख लेखक के पद तक पहुँचने की उनकी यात्रा का रहस्य भी यही है । "अपने लक्ष्य के प्रति उनमें एक सिद्धि लगन मिलती है। उनकी सफलता के मूल में यही लगन और आदम्य आस्था कार्यरत रहती है । उनकी रचनात्मक और अन्यान्य क्षेत्रों की उपलब्धियाँ इसकी निशानी है।"[1]

नरेंद्र कोहली एक ईमानदार व्यक्ति थे उन्होंने अपने जीवन के हर क्षेत्र में अपनी इमानदारी निभाया। कोहली जी के विद्यार्थी जब उनके लिए उपहार लेकर आते थे तब वे उन उपहारों को लौटा देते थे। कोहली जी ज्ञान के भूखे थे। उनके अध्ययन, मनन और चिंतन का क्षेत्र काफी विस्तृत था। ज्ञान-विज्ञान के लगभग सभी विषय पर उनकी रूचि थी। भाषा पर उनके असाधारण पकड़ के कारण किसी भी विषय पर धाराप्रवाह बोल सकते थे।

नरेंद्र कोहली कठोर आलोचना के खिलाफ अपने लेखन कार्यों का बचाव करने के लिए तर्क का उपयोग करते थे और वे आलोचकों को चुप कराते थे। इनमें संतुलन बनाए रखने की अद्भुत क्षमता उनमें होती थी। वे खुद को आसानी से भावनाओं की बहकावे में आने नहीं देते थे।

अपने देश, भाषा, धर्म एवं संस्कृति के वे एक प्रबल समर्थक थे। अगर इनसे जुड़ी उनकी विश्वास पर कोई सवाल उठाते हैं या आलोचना करते हैं तो वहीं उन पर व्यंग्य करते थे। उनका यह आदर्श हम उनके समस्त धार्मिक सृष्टियों में देख सकते हैं ।

कोहली जी को बचपन से ही लेखक बनने की बहुत इच्छा थी। उनकी स्कूली दिनों से ही इस तृष्णा का जन्म उनके मन में हो चुका था। कोहली जी का कहना है कि "मेरे पास अपनी प्रकृति की पहचान और जीवानुभव के प्रमाण है कि मुझे सिवाय लेखक के और कुछ नहीं बनना था।"[2] छठी कक्षा में पढ़ाई करने के दौरान उन्होंने लिखना शुरु कर दिया था। अपनी जैत्र यात्रा का आरंभ वहाँ से शुरू करके यह व्यक्तित्व आज हिंदी साहित्य के महान वटवृक्ष जैसे लेखक का रूप धारण कर लिया है ।

2.1.2 नरेंद्र कोहली का कृतित्व

नरेंद्र कोहली एक उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार एवं व्यंग्यकार थे। कहानी उपन्यास नाटक एवं व्यंग इन सभी विधाओं में उन्होंने लगभग सौ पुस्तकें

[1] डॉ. रीजा. आर. एस – नरेंद्र कोहली के उपन्यास आधुनिकता के संदर्भ में – पृ. स – 43
[2] डॉ. रीजा. आर. एस – नरेंद्र कोहली के उपन्यास आधुनिकता के संदर्भ में – पृ. स – 45

प्रकाशित की है। उनकी बहुमुखी प्रतिभा, विविधता और प्रकृति हमें शायद ही ओर कहीं नज़र आएंगे। आधुनिक धरातल में उन्होंने इतिहास और पुराणों की कहानियों को देखा और उसकी आधार पर बहुत सारे उत्कृष्ट रचनाएं लिखी।

अपने समय के अन्य लेखकों से कोहली जी की रचना शैली पर्याप्त रूप से भिन्न थी। साहित्य की समृद्धि एवं समाज की प्रगति में उनका योगदान कभी हम कभी नज़रंदाज नहीं कर सकते।

नरेंद्र कोहली की साहित्यिक रचना की शुरुआत छठी कक्षा में कविता लेखन से हुई। उनकी कक्षा की हस्तलिखित पत्रिका में कविताएँ प्रकाशित होती थी। अपनी युवा काल में बहुत सारी कविताएँ लिखने के बावजूद भी कविता को उन्होंने अपने मुख्य सृजन क्षेत्र नहीं चुना। कोहली जी द्वारा लिखित कविता 'इतना ना रोना मेरी राधे' सरिता नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई पत्रिका में जो उन दिनों काफी चर्चित भी हुआ था। "संयोग की बात है कि नरेंद्र जी ने कहानियाँ और कविताएँ पायः साथ साथ ही लिखना आरंभ कर दी थी। कालखंड में इनमें से एक विधा छूट गयी। कॉलेज के आरंभिक दो वर्षों में उनका कविरूप मुखर हो उठा था और इन कविताओं को उन्होंने कॉलेज के कवि-सम्मेलन में सुनाया भी था। मगर इनकी कहानियाँ लोगों को प्रभावित करने में सफल रही। इसलिए उन्होंने कविताएँ लिखना छोड़ दिया।"[3]

सातवीं कक्षा में उन्होंने कहानियाँ लिखना शुरू किया। हिंदोस्ताँ, जनता निशा नामक उर्दू कहानी स्कूल के ही मुद्रित पत्रिका में प्रकाशित हुई। कोहली जी कहते हैं "मेरा लेखन कहानियों से आरंभ हुआ या कविता से यह कहना कठिन है, किंतु इसमें कोई भ्रम नहीं है कि मेरे लेखन का विकास कहानियों के माध्यम से हुआ।"[4] शीर्षक नामक 1960 में 'कहानी' पत्रिका में प्रकाशित कहानी को कोहली जी द्वारा कहानी विधा का सबसे प्रथम प्रकाशन माना जाता हैं । कहानीकार के रूप में उनकी यात्रा भी इसी कहानी से शुरू होती है ।

2.1.2.1 कहानी

नरेंद्र कोहली ने अपनी कहानियों में समकालीन समाज के यथार्थ को उभारा है । कोहली जी कहते हैं "मेरी रचना प्रक्रिया में एक विचित्र अंतर आता जा रहा था। सृजन प्रक्रिया के वृक्ष के तने में से दो शाखाएँ उग आयी थीं - व्यग्यं और उपन्यास। बीज आ

[3] रैन. एस. जी - डॉ. नरेंद्र कोहली व्यक्तित्व एवं कृतित्व - पृ. स - 14

[4] नरेंद्र कोहली - समग्र कहानियाँ भाग: 1 - पृ. स - 1

जाने पर फल सड़ जाते हैं। इन दो टहनियों के विकास से कहानी अनायास ही सूख गई थी।"[5]

परिणीति (1969), कहानी का अभाव (1977), दृष्टि देश में एकाएक (1979), शटल (1982), नामक का कैदी (1983), निचले प्लेट में (1984), नरेंद्र कोहली की कहानियाँ (1984), संचित भूख (1985) - इन कहानी संग्रहों को सामग्र कहानियाँ शीर्षक में दो भागों में प्रकाशित किया गया, समग्र कहानियाँ भाग - 1 समग्र कहानियाँ भाग - 2। आगे दो और कहानी संग्रह प्रकाशित किया – मेरी तेरह कहानियाँ (1998), दस प्रतिनिधि कहानियाँ (2006), रोज सवेरे (2012)।

2.1.2.2 उपन्यास

पौराणिक कथाओं को तत्कालीन संदर्भों में जोड़कर युगीन समस्याओं को स्पष्ट करने में कोहली जी सक्षम थे। ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, उपन्यासकार होने के साथ–साथ जीवन शैली के उपन्यासकार, बाल उपन्यासकार, बेतुकी उपन्यासकार एवं एक सफल व्यंग्यकार भा थे। कोहली जी ने रामायण और महाभारत के विस्तृत कथा संदर्भों को बहुत ही सरल किंतु तार्किक ढंग से जोड़ा है ।

❖ अभ्युदय

अभ्युदय 1971 में भारत–पाकिस्तान युद्ध की एक हात्सा हुई जिसे कई सारे मनुष्यों की हत्या हुई, इस घटना ने कोहली जी के मन में एक ऐसा घाव बन गया जिसके आधार पर उन्होंने अभ्युदय की रचना की। राक्षसों के हाथों बेगुनाह ऋषियों की मृत्यु को उन्होंने इस हादसे के साथ जोड़कर लिखा है । कोहली जी इस माध्यम से समकालीन समाज की क्रूर सत्य को उद्घाटित किया है । रामचंद्र कथा श्रंखला के पाँच उपन्यास प्रकार है - दीक्षा (1975), अवसर (1976), संघर्ष की ओर (1978), युद्ध भाग–1 और भाग - 2 (1978)।

❖ महासमर

अध्यात्म महाकाव्य महाभारत के पुनः कथन महासमर सबसे महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय उपन्यास श्रंखलाओं में से एक है। आठ भागों में विभाजित यह श्रंखला का इसके अतिरिक्त एक और भाग है जिसका नाम है अनुषामिक। इसमें नरेंद्र कोहली ने महासमर

---

[5] नरेंद्र कोहली – समग्र कहानियाँ भाग: 1 - पृ. स – 4

और उसकी सृजनात्मक पक्षों की चर्चा किया है । महाभारत के समय एवं देशकाल में लिखी इस उपन्यास में राजा शाँतनु के शासन में हस्तिनापुर की महिमा और उनके पुत्र एवं राजकुमार देवव्रत भीष्म के साथ उनके मिलन से शुरू होता है। कहानी को एक आधुनिक या समकालीन गद्य विधा के रूप में लिखा है जिसमें महाभारत के असंख्य पात्रों की जीवन एवं उनसे जुड़ी उल्लेखनीय विवरण इनकी आंतरिक दुविधाएँ, नियती और प्रतीक्षाओं के संबंध में विस्तार से लिखा है । इस उपन्यास के पात्रों का चरित्र और उनके आख्यान, कर्मफल और उसके परिणामों में एक विशेषज्ञ की दृष्टि डाला गया है। महासमर से आठ भाग इस प्रकार है- बंधन (1988), अधिकार (1990), कर्म (1991), धर्म (1993), अंतराल (1995), प्रच्छन्न (1997), प्रत्यक्ष (1998) और निर्बंध (2000)।

अन्य पौराणिक उपन्यास –

अभिज्ञान (1981) - अभिज्ञान कृष्णा और सुदामा की प्रसिद्ध कथा संदर्भ पर आधारित एक पौराणिक उपन्यास है । इसमें श्रीमद्भगवद्गीता के सिद्धांतों को एक नए रूप में प्रस्तुत करके उसकी व्याख्याँ किया है ।

वसुदेव (2007) – इस उपन्यास में धर्म और त्याग का प्रतीक वसुदेव व्यक्ति के चरित्र को उद्घटित किया है । इसमें समाज, राजनीति और अध्यात्म का मेल हुआ है ।

सैरेंध्रि (2009) – पांडवों के अज्ञातवास के दौरान द्रोपति सैरेंध्रि नाम से वेश बदलकर रानी सुदेष्णा के महल में एक साल काम करती है । उसकी व्यवहार साधारण नौकरानीयों भिन्न होने के कारण सुदेष्णा द्रौपति के प्रति एक विशेष श्रद्धा रखती थी। जिस कारण से द्रौपति को एक वर्ष का अज्ञातवास अग्नि परीक्षा लगी। नकाबपोश समाज की जीवन पर कोहली जी ने यहाँ कठोर व्यंग्य किया है ।

- ❖ **एतिहासिक उपन्यास** - आत्मा दान (1983) - 'आत्मा दान' प्रसिद्ध उपन्यासकार नरेंद्र कोहली की ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित उपन्यास है । उपन्यासकार ने इसकी घटनाओं को इतने सजीव ढंग से चित्रित किया है कि पढ़ते समय हमें ऐसा महसूस होता है कि वे घटनाएँ हमारी आँखों के समक्ष घटित हो रहा है। संवेदनशील भाषा और प्रवाहमय शिल्प के कारण यह उपन्यास अत्यधिक मनोरंजक एवं पठनीय है ।
- ❖ **सामाजिक उपन्यास** - पुनरारंभ (1972), साथ सहा गया दुःख (1974), प्रीति-कथा (1986), क्षमा करना जीजी (1995), जंगल (1977)

❖ **जीवन की शैली पर आधारित उपन्यास** - तोड़ो कारा तोड़ो निर्माण (1992), साधना (1993), परिव्राजक (2003), निर्देश (2004), संदेश (2008), प्रसाद (2011)।

❖ **व्यंग्य उपन्यास** – नरेंद्र कोहली की व्यंग्य उपन्यास बहुत ही प्रसिद्ध है। उन्होंने पाँच व्यंग्य लघु उपन्यास लिखे हैं जो 'बेतुकी उपन्यास' (Absurd Novels) नाम से संग्रहित है। जो है- आतंक (1972), आश्रितों का विद्रोह (1973), दि कॉलेज (1972), अस्पताल (1972), दि लाईफ (1972), शफा देने वाले (1972), मुहल्ला (1972)।

❖ **लघु उपन्यास** - मेरा अपना संसार (1975), प्रजातंत्र का चक्रवर्ती (2008)।

❖ **बाल उपन्यास** - हम सबका घर (1991), एक दिन मथुरा में (1991)।

2.1.2.3 नाटक

नरेंद्र कोहली एक सशक्त नाटककार थे। उनके नाटक राजनीतिक, पारिवारिक, पौराणिक एवं सामाजिक विषयों पर आधारित है । शंबूक की हत्या (1975), निर्णय रुका हुआ (1985), हत्यारे (1985) और गौरे की दीवार (1986) ये चारों नाटक का संकलन 'सामग्र नाटक' नामक कोहली जी द्वारा 1990 प्रकाशित नाटक संकलन में पुनः प्रकाशित हुए। इसमें दो नए नाटक भी शामिल थे - प्रतिद्वंद्वी एवं नींद आने तक। इसके अतिरिक्त उन्होंने संघर्ष की ओर (1998) लिखा जो रामायण कथा श्रंखला 'अभ्युदय' का एक भाग 'संघर्ष की ओर' नामक उपन्यास के नाट्य रूपांतरण है । आगे 'अभ्युदय; की अंशों पर आधारित दो नाटक 1998 में प्रकाशित हुए - किष्किंधा और अगस्त्य कथा।

2.1.2.4 व्यंग्य

नरेंद्र कोहली अंग्रेज़ी को शिक्षा का माध्यम बनाए रखने में समर्थन करने वालों, आधुनिक भारत के चुनाव, लोगों के विभिन्न प्रकार की परेशानियां एवं त्रासदि, आधुनिक लड़कियों की पीड़ा जैसी विषयों पर मौलिक एवं सार्थक व्यंग्य किया है। "इनके व्यंग्य बाण से समाज के पैशाचिकताएँ आहत होती जाती है। समाज, राजनीति, धर्म, नैतिकता, आर्थिक जैसे किसी भी क्षेत्र को उन्होंने नहीं छोड़ा है। समाज की विसंगतियों ने ही उनके व्यंग्य को इतना तीखा बनाया।"[6]

---

[6] नरेंद्र कोहली के उपन्यास आधुनिकता के संदर्भ में - डॉ. रीजा. आर. एस – पृ. स – 70

नरेंद्र कोहली द्वारा लिखित व्यंग रचनाओं की सूची निम्नलिखित है -

एक और लाल तिकौन (1970), जगाने का अपराध (1973), मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ (1977), आधुनिक लड़की की पीड़ा (1978), त्रासदियाँ (1982), परेशानियाँ (1986), समग्र व्यंग्य (1991), आत्मा की पवित्रता (1996), मेंरी इक्यावन व्यंग्य रचनाएँ (1997) गणतंत्र का गणित (1997), देश के शुभ चिंतक (1998), त्राहि-त्राहि (1998), इश्क एक शहर का (1998), रामालुभाया कहता है (2000), मेरे मुहल्ले के फूल (2000), सबसे बड़ा सत्य (2000), वह कहाँ है (2000), आयोग (2005) तथा आत्मरक्षा का अधिकार (2010)।

कहानी, उपन्यास, नाटक, आत्मकथा, निबंध, संस्मरण जैसे सभी विधाओं की रचनाएँ इनमें शामिल है ।

2.1.2.5 निबंध

नरेंद्र कोहली के चार निबंध संग्रह है -

1. नेपथ्य (1983) – आत्मपरक निबंध
2. बाबा नागार्जुन (1987) - नागार्जुन पर लिखा गया संस्मरणात्मक लंबा निबंध
3. माजरा कहाँ है? (1989) – पुस्तकों के महत्व पर लिखी गयी निबंध
4. किसे जगाऊँ? (1996) – सांस्कृतिक निबंध

2.1.2.6 आलोचना

नरेंद्र कोहली ने प्रेमचंद के व्यक्तित्व एवं उनके साहित्य सिद्धांतों पर और महाभारत एवं रामायण पर दो मिथकीय आलोचनात्मक ग्रंथ लिखे हैं ।

1. प्रेमचंद (1976)
2. जहाँ है धर्म, वही है जय (1993)
3. मेरे राम मेरी राम कथा (2009)

2.1.2.7 संस्मरण

2000 में प्रकाशित 'स्मरीमि' नामक संस्मरण, कोहली जी ने अपने जीवन और अपने कुछ खास दोस्तों के जीवन से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण क्षणों और घटनाओं की

याद में लिखा है। इस संस्मरण में लखक के अपने जीवन से संबंधित चार संस्मरण भी संग्रहीत है, जो हैं – बड़ा आदमी, धर्म परिवर्तन, मेरी हमदम मेरी दोस्त और प्रणाम।

2.1.2.8 आत्मकथा

'नरेंद्र कोहली ने कहा' (1997) नामक आत्मकथा में, कोहली जी ने अपने विचारों एवं सृजन प्रक्रियाओं पर लिखा है । अपने लेखन कार्यों को लेकर उनकी राय इस प्रकार है – "कुछ इच्छाएँ जन्मजात होती हैं, यह उसी इच्छा का परिणाम था। लेखक बनने का कोई तर्क नहीं था। वह मेरी नैसर्गिक इच्छा थी। इस आत्मकथा का अध्ययन करने से नरेंद्र कोहली को एक लेखक और एक व्यक्ति के रूप में पाठक गहन रूप से समझ पाएँगे"[7]

2.1.2.9 साक्षात्कार

मेरे साक्षात्कार (2008) में इसमें डॉ. विवेक राय, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. कमल किशोर गोयनका, डॉ. कविता सुरभी, डॉ. प्रेमजनमेजय, डॉ. अवनीजेश अवस्थी, महेश दर्पण, डॉ. सुरेश कांत और डॉ. योगेंद्र प्रताप सिंह जैसे महान एवं प्रतिभाशाली व्यक्तियों के साक्षात्कार संकलित है जो समय-समय पर कोहली जी से मिलने आए थे।

2.1.2.10 जीवनी

स्वामी विवेकानंद (2004) – स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व पर एक विस्तृत झाँकी।

2.1.2.11 पत्र संकलन

प्रतिनाद (1996)

प्रतिनाद में कोहली जी के नाम पर वरिष्ठ साहित्यकार, संपादक एवं पाठकों द्वारा लिखित चुने गए पत्र संग्रहित है ।

2.1.2.12 बाल कथाएँ

नरेंद्र कोहली ने अनेक बाल कथाएँ भी लिखी है जिनमें कई संग्रह प्रकाशित है । जैसे –

गणित का प्रश्न (1978), आसान रास्ता (1985), अभी तुम बच्चे हो (1995) कुकुर (1997) समाधान (1997)।

---

[7] नरेंद्र कोहली ने कहा – नरेंद्र कोहली – पृ. स – 84

2.1.2.13 शोध ग्रंथ

नरेंद्र कोहली के दो शोध ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं -

1. प्रेमचंद के साहित्य सिद्धांत (1966) - एम. ए का शोध निबंध
2. हिंदी उपन्यास और सिद्धांत (1977) - पी.एच.डी का शोध प्रबंध

2.1.2.14 संकलित रचनाएँ

1. नवनीत (2007) - कहानी नाटक जैसे प्रतिनिधि रचनाओं का संकलन (दो खण्डों में प्रकाशित)
2. नरेंद्र कोहली : चुनी हुई रचनाएँ (1990) - चुनी हुई रचनाओं का संकलन नाटक

नरेंद्र कोहली द्वारा लिखित कई उपन्यास, कहानी एवं नाटक के भारत के अन्य भाषाएँ जैसे उड़िया, मराठी, अंग्रेजी, मलयालम, पंजाबी यहाँ तक कि नेपाली में भी अनुवाद हुए हैं जो काफी चर्चित रहे।

81 वर्ष की आयु में, कोविड़-19 के कारण कुछ समय वेंटिलेटर में रहने के बाद 17 अप्रैल 2021 को उनकी मृत्यु हो गई।

2.1.3 नरेंद्र कोहली को प्राप्त पुरस्कार व सम्मान

- ❖ राज साहित्य पुरस्कार 1975 - 76 ई (साथ सहा गया दुखः), शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ।
- ❖ उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार 1977 - 78 ई (मेरा अपना संसार) उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ।
- ❖ इलाहाबाद नाट्य संघ पुरस्कार, 1978 ई (शंभूक की हत्या), इलाहाबाद नाट्य
- ❖ संगम, इलाहाबाद।
- ❖ उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार, 1986 - 80 ई (संघर्ष की ओर), उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ।
- ❖ मानस संगम साहित्य पुरस्कार 1960 - 78 ई (समग्र राम कथा), मानस संगम, कानपुर।
- ❖ श्री हनुमान मंदिर साहित्य अनुसंधान संस्थान विद्यावृत्ति 1982 ई (समग्र राम कथा), श्री हनुमान मंदिर साहित्य अनुसंधान संस्थान, कोलकात्ता।
- ❖ साहित्य सम्मान 1950 - 86 ई (समग्र साहित्य) हिंदी अकादमी, दिल्ली।

- साहित्यिक कृति पुरस्कार 1987 – 88 ई (महासमर – 1, बंधन), हिंदी अकादमी दिल्ली।
- डॉ कामिल बुल्के पुरस्कार, 1989 ई (समग्र साहित्य), राजभाषा विभाग, बिहार सरकार, पटना।
- चकल्लस पुरस्कार, 1991 ई, (समग्र व्यंग्य साहित्य), चकल्लस पुरस्कार ट्रस्ट, मुंबई।
- अट्टहास शिखर सम्मान, 1994 ई (समग्र व्यंग्य साहित्य) माध्यम साहित्य संस्थान, लखनऊ।
- शलाका सम्मान, 1995 – 96 ई (समग्र साहित्य), हिंदी साहित्य अकादमी दिल्ली।
- साहित्य भूषण, 1998 ई (समग्र साहित्य), उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ।
- डॉ हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान, 2000 ई (समग्र साहित्य) श्रीबड़ाबाज़ार कुमार सभा पुस्तकालय, कोलकत्ता।
- राम कथा सम्मान, 2003 ई (अभ्युदय), साकेत निधि, दिल्ली।
- पंडित दीनदयाल उपाध्याय सम्मान, 2004 ई, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ।
- भाषा भूषण, 2004 ई साहित्य मंडल, श्रीनाथद्वारा, राजस्थान।
- हिंदी गौरव, 2005 ई साहित्य सभा, सीतापुर, उत्तर प्रदेश।
- जनवाणी सम्मान, 2007 ई, (समग्र साहित्य) इटावा हिंदी सेवा निधि, इटावा।
- गोयनका व्यंग्य साहित्य सारस्वत सम्मान, 2008 ई, कमला गोयनका फाउंडेशन, मुंबई।
- श्री शिवकुमार शास्त्री शताब्दी सम्मान, 2009 ई साहित्य मंडल श्रीनाथद्वारा, राजस्थान।
- साहित्यश्री सम्मान, 2010 ई दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन, दिल्ली।
- श्रीमती उर्मिला मिश्र राष्ट्रीय साहित्य सर्जक सम्मान, 2010 ई मध्य भारत हिंदी साहित्य सभा, ग्वालियर।
- डी.लिट् की मानद उपाधि, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, 2012।
- व्यास सम्मान, 2012 ई के.के विरला फाउंडेशन, नई दिल्ली।
- स्वामी विवेकानंद 'शब्द – योगी' सम्मान – संकल्प तथा 'महाराजा अग्रसेन टेक्निकल एजुकेशन सोसायटी नई दिल्ली' (10 फरवरी 2013 ई)।
- पद्मश्री – 2017

2.2 अमीश त्रिपाठी व्यक्तित्व एवं साहित्य सृजन

अमीश त्रिपाठी इक्कीसवीं सदी में भारतीय पौराणिक कथाओं के पुनः कथित लेखन प्रवृत्ति के भारत के सबसे मशहूर प्रचारक हैं । फॉर्ब्स इंडिया द्वारा बनाये गए भारत के सबसे प्रभावशाली सौ व्यक्तियों की सूची (Forbes's 100 most influential people of India) में शामिल अमीश त्रिपाठी ने युवा पीढ़ी को पौराणिक कथाओं का अध्ययन एवं इन पर चर्चा करने के लिए प्रेरित किया। अमीशजी ने शिवपुराण को एक नई उपन्यासत्रयी शैली में लिखकर भारतीय मिथकीय साहित्य के लिए एक नया मोड़ प्रदान की। अमीश त्रिपाठी साहित्य के लोकप्रिय क्षेत्र में अपने लेखन कार्य के विषय एवं कथा को विकसित करने के लिए मिथक की रचनात्मक प्रयोग करते हैं ।

अंग्रेजी भाषा के साहित्य के इतिहास में अन्य भारतीय लेखक एवं अमीश त्रिपाठी के लेखन कार्यों का बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है । भारतीय लेखकों की सौंदर्यात्मकथा एवं साहित्य भावना इतना गहरा है कि वे इतिहास कला और शास्त्र को पुराणों एवं वेदों के रूप में लिखा। अंग्रेजी भाषा में साहित्य लेखन करने वाले कई नए युवा लेखक है जैसे - प्रीती शेनॉय, अशोक बैंकर, आनंद नीलकंठन, चेतन भगत, दुर्जोय दत्ता ने अंग्रेजी भाषा में भारतीय साहित्य को नया मोड़ दिया। मिथक को साहित्य में पुनः कहने की शैली में पिछले कुछ दशकों में कई क्रांतिकारी परिवर्तन हमें देखने को मिलता है, जिनमें अमीश त्रिपाठी की मिथकीय रचनाएँ मील का पत्थर साबित हुआ।

- ❖ **जन्म** - अमीश त्रिपाठी का जन्म 18 अक्तूबर 1974 को मुंबई में हुआ था।
- ❖ **परिवार –** अमीश त्रिपाठी एक मध्यवर्गीय धार्मिक परिवार से है उनके दादाजी काशी में एक पंडित है जो बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में भौतिकी एवं गणित के अध्यापक थे। अमीश त्रिपाठी के पिता विनय कुमार त्रिपाठी एपिगेनेरेस बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी, महाराष्ट्र के अध्यक्ष थे। इन्होंने बायोटेक ओर कैंसर निदान के क्षेत्र में कई आविष्कार किए। इनकी मृत्यु 6 जुलाई 2021 को हुई। अमीश जी के माता का नाम उषा त्रिपाठी है। उनकी बहन भावना रॉय एक लेखक और एक समाज सेविका है । उनके जुडुवा भाई आशीष त्रिपाठी त्ज़र लब्स (Tzar Labs) में सी.ई.ओ है जो अमीश त्रिपाठी की तरह एक पूर्व बैंकर थे। अनीश त्रिपाठी त्ज़र लब्स में डायरेक्टर के रूप में काम करते हैं। दोनो भाई त्ज़र लब्स के सह संस्थापक है ।

❖ **शिक्षा** – अमीश जी, कैथेड्रल और जॉन कॉनन स्कूल, सेंट जेवियर्स कॉलेज मुंबई में पूर्व छात्र है । आगे उन्होंने इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट से एम.बी.ए किया।

❖ **आजीविका –** इतिहास में रुचि रखने के बावजूद भी अपने परिवार की आर्थिक पृष्ठभूमि के कारण उन्होंने आजीविका के रूप में वित्त क्षेत्र को चुना। उन्होंने भारत के कई बैंकों में काम किया है। ऐ.डी.बी.ऐ फेडरल लैफ इन्षुरन्स के मुख्य विपणन अधिकारी और उत्पाद प्रबंधक के रूप में वित्त विभाग में सेवा किया। अमीश जी ने विभिन्न संगठन में चोदह् वर्षों तक वित्तीय सेवा उद्योग में काम किया। अमीश त्रिपाठी लेखनी में अपने जीवन समर्पित करने के पूर्व एक सफल बैंकर थे। किंतु भारत और भारतीय साहित्य को अपने तरफ से कोई सार्थक योगदान देने की चाह् में उन्होंने मिथक की उपन्यास लिखना आरंभ किया।

❖ **पत्नी और संतान –** अमीश त्रिपाठी की पत्नी प्रीति व्यास अमर चित्र कथा कॉमिक्स के 'अमर चित्र कथा प्राइवेट लिमिटेड' पब्लिशर्स में सी.ई.ओ है। वह् 'फण ओके प्लीज' पब्लिशिंग के संस्थापक भी है । अमीश जी ओर उनकी पत्नी प्रीति 2020 में अलग हो गए। दोनों का एक बेटा है जिसका नाम नील त्रिपाठी है ।

2.2.1 अमीश त्रिपाठी का व्यक्तित्व

अमीश त्रिपाठी का जन्म मुंबई में हुआ था, किंतु ओड़िया के एक शहर में पले बड़े। ओड़िया के उस छोटी सी शह्र में पले बढ़ने का प्रभाव उनके विचारों में पड़ा। अमीश त्रिपाठी का परिवार बनारस के थे जो काफी धार्मिक थे। गहरे धार्मिक परिप्रेक्ष्य का इस पवित्र शह्र के लोग भगवान शिव के भक्त थे, जिसका असर अमीश त्रिपाठी पर भी पड़ा। अमीश त्रिपाठी शिवजी के बहुत बड़ा प्रशंसक थे और वे शिवजी पर आसक्त थे। उनके दादाजी संस्कृत के अनुसंधानकर्ता एवं एक पंडित थे जिनसे प्रेरणा लेकर अमीश जी ने हिंदू दर्शन एवं धर्म पर उपन्यास लिखा।

अमीश त्रिपाठी के बचपन में उनका लेखक बनने का कोई इच्छा नहीं था। एक होशियार विद्यार्थी होने के नाते उन्होंने शास्त्र को चुना और आई.आई.एम कोलकाता से एम.बी.ए किया। ऐ.डी.बी.ऐ फेडरल लैफ इन्षुरन्स के मुख्य विपणन अधिकारी और उत्पाद प्रबंधक के रूप में वित्त विभाग में काम किए अमीश त्रिपाठी, अपने दैनिक जीवन में बहुत व्यस्त रहने के कारण उनको उपन्यास लिखने का समय नहीं मिलता था। नौकरी के दौरान अमीश त्रिपाठी जी को तीन घंटे

गाड़ी चला कर जाना पड़ता था। समय का लाभ उठाने के लिए तीन हज़ार रुपए के मासिक वेतन में एक ड्राइवर को नियुक्त किया और पीछे की सीट में बैठकर अपना पहला उपन्यास 'मेलुहा के मृत्युंजय' लिखना जारी किया। अपनी पहली दो उपन्यास लिखते समय एक बैंकर की नौकरी जारी रखा किंतु अपनी दूसरी उपन्यास 'नागाओं के रहस्य' की सफलता के बाद उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी और एक पूर्णकालिक लेखक बन गये।

अमीश त्रिपाठी को समाज में मान्यता एवं प्रसिद्धि उनके द्वारा प्रकाशित सबसे पहली किताब मेलुहा के मृत्युंजय से मिलना शुरू हुआ था। साहित्य जगत में उनकी प्रवेश बनी इस किताब का बीस लाख से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी है । मेलुहा के मृत्युंजय, नागाओं का रहस्य और वायूपुत्रों की शपथ इतना सफल हुआ कि भारतीय साहित्य प्रकाशन के इतिहास में सबसे तेज़ बिखने वाली पुस्तक श्रंखला बनी। इसके पश्चात उन्होंने रामायण पर उपन्यास श्रंखला प्रकाशित करना शुरू किया। इस श्रृंखला के तीन किताब प्रकाशित हो चुकी है ।

युवा पाठकों को ध्यान में रखकर सरल भाषा में साहित्य रचनाओं में मिथक का उपयोग करने के रूप में अमीश त्रिपाठी को सबसे प्रथम अन्वेषक कहना गलत नहीं होगा। 'रिसेप्शन ऑफ़ मिथ इन द सेलेक्ट नॉवेल्स ऑफ़ अमीश त्रिपाठी' में प्रीती मनसुखलाल ने अमीश त्रिपाठी के बारे इस प्रकार लिखा है कि "अमीश त्रिपाठी पौराणिक यथार्थों को इस प्रकार मान्यता दिलाने का प्रयास करते हैं जिससे की वह आधुनिक दुनिया के विचार एवं तर्कों के साथ अनुकूल हो ।"

मिथकीय रचना इससे पहले भी भारतीय साहित्य में काफी सारे हुए है। किंतु अमीश त्रिपाठी ने जिस शैली का प्रयोग अपने मिथकीय उपन्यासों में किया है वह एकदम नया और अनदेखा था जिसके कारण उन्हें कई सारे कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। तकरीबन उन्नीस प्रकाशकों ने उनकी पहली उपन्यास को छापने से इनकार किया। कई प्रकाशक युवा पीढ़ी को आकर्षित करने के लिए प्रेम कहानियों पर उपन्यास लिखने की अपेक्षा की। किंतु यह अमीश त्रिपाठी के लिए स्वीकार ही नहीं था। अंत में वेस्टलैंड पब्लिकेशंस ने उनकी उपन्यास को छापने का फैसला किया किंतु इसमें अमीश जी को खुद भी पैसे लगाने पड़े थे। अमिश जी ने अपनी लाभ या नष्ट के बारे में ना सोच कर अपने लेखन कार्यों को दुनिया के सामने लाने के लिए चाहिए इस शर्त को अपनाया। अमीश जी का यह निर्णय उनके लिए भाग्यकारी साबित हुआ।

अमीश जी अपने मकसद की ओर पहली कदम के रूप में बहुत सारे मिथकीय कहानियाँ विशेषकर भारतीय हिंदू मिथक के संबंध में पढ़ने लगे। उनका सबसे प्रथम विचार अच्छाई और बुराई के संबंध में कुछ लिखने का था किंतु उनके परिवार ने उन्हे सलाह दिया थ्रिलर एवं साहसिक कहानी, जो भारतीय के आधार पर हो वैसी कहानियों का प्रसिद्ध एवं सफल होने की संभावना अधिक है । इसीलिए 'मेलुहा के मृत्युंजय' लिखने का फैसला किया। अमीश त्रिपाठी शिवजी के भक्त होने के कारण ही अपने पहले लेखन कार्य के मुख्य पात्र शिवजी को बनाने का फैसला किया। ईश्वर भी हमारी तरह एक साधारण मनुष्य हुआ करते थे, उनके साहसिक एवं अच्छे कर्मों ने उन्हें इतिहास में ईश्वर का स्थान दिला दिया। इस सिद्धांत पर अटूट विश्वास अपने मन में रखकर ही अमीश त्रिपाठी ने अपनी प्रथम रचना कार्य का प्रकाशन किया। रामायण एवं शिव पुराण में कहे गये कई कहानियों को जोड़कर उन्होंने यह किताब लिखा। वेदों के कहे गए रूद्र की चरित्र, पुराण में कहे गए भगवान शिव जी के साथ यह जोड़कर एक नया दिलचस्प पात्र की सर्जना किया जो समाज और संस्कृतियों के बारे में एवं आधुनिक संवेदनाओं का प्रतिध्वनित करता है ।

आज उनकी किताबें देश विदेश में लाखों की संख्या में बिकता है । इसका एक कारण है उनके विपणन शैली। अमीश त्रिपाठी एक लेखक होने के साथ-साथ एक कुशल व्यवसायी भी है । ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे सामाजिक माध्यमों में भी अपनी पहली उपन्यास का विज्ञापन दिया और एक ट्रेलर फिल्म बनाकर यूट्यूब चैनल में अपलोड किया। राम चंद्र कथा श्रृंखला की पहली किताब 'राम इक्षवाकु के वंशज' की विज्ञापन 2015 के आई.पी.एल के दौरान टीवी में भी दिखाया गया था।

वह एक संगीत प्रेमी थे जो लिखते समय भी संगीत सुनते थे। उन्हें बॉक्सिंग एवं जिम्नास्टिक्स का शौक है । एक पुस्तक प्रेमी होने के नाते वे महीने में चार से पाँच किताबें तक पढ़ते हैं ।

अमीश त्रिपाठी एक ऐसे शिक्षित पीढ़ी के व्यक्ति है जहाँ के लोग शास्त्र एवं आधुनिक तकनीकों पर भरोसा करते हैं । ऐसे लोगों को अध्यात्म एवं मिथक की दुनिया में वापस ले जाना कठिन है । अमीशजी के दादाजी जो एक पंडित थे, उन्होंने अमीश जी को भारतीय मिथक के जटिल बातों को समझने में काफी सहायता की। लेखनी के लिए उनका स्रोत सामग्री केवल पुराण ग्रंथ एवं अन्य लेखन कार्य ही नहीं बनी बल्कि वे मौखिक स्रोत एवं कहानियाँ जो अपने

दादाजी एवं परिवार के अन्य सदस्यों से सुना, उन्हें भी अपने ग्रंथ में जोड़ा। अपनी पहली उपन्यास लिखते वक्त उन्होंने कई सारे कठिनाइयों का सामना किया। कई बार उन्हें ऐसा लगा कि वे रास्ते से भटके जा रहे हैं । अपनी पत्नी की सुझाव पर उन्होंने कई कहानियों पर एक साथ काम किया और बाद में उन सब को एक धागे में जोड़ा। शिवजी पर लिखी उपन्यासत्रय ने अमीशजी को आधुनिक भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान दिला दिया। वर्त्तमान में अमीश त्रिपाठी लन्दन के नेहरु सेण्टर में डायरेक्टर है जो एक लेखक के रूप में इनके लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

2.2.2 **अमीश त्रिपाठी का कृतित्व**

अमीश त्रिपाठी की कुल 10 किताबें प्रकाशित हो चुकी है, सात कथा साहित्य, एक ऐतिहासिक कथा साहित्य और दो कथेतर साहित्य (Non-Fictional)।

शिवजी पर लिखी उपन्यासत्रय –

1. मेलुहा के मृत्युंजय (The Immortals of Meluha) - 2010
2. नागाओं का रहस्य (The Secret of The Nagas) - 2011
3. वायुपुत्रों की शपथ (The Oath of Vayuputhras) – 2013

रामचंद्र कथा श्रंखला –

1. राम इक्षवाकु के वंशज (Ram Scion of Ikshvaku) - 2015
2. सीता मिथिला की योद्धा (Sita Warrior of Mithila) - 2017
3. रावण आर्यवर्त की शत्रु (Raavan Enemy of Aryaputra) – 2019
4. लंका का युद्ध (War of Lanka) - 2022

ऐतिहासिक कथा साहित्य –

1. भारत का रक्षक महाराजा सुहेलदेव (Legend of Suheldev: The King Who Saved India) – 2020

कथेतर साहित्य –

1. अमर भारत: युवा देश, कालातीत सभ्यता (Immortal India: Young India, Timeless Civilization) - 2017
2. धर्म: सार्थक जीवन के लिए महाकाव्यों की मीमांसा (Dharma: Decoding The Epics For A Meaningful Life) - 2020

अमीश त्रिपाठी बहुत ही मनोरंजक तरीके से शिवपुराण की पुनः कथन अपने किताबों में लिखा है । इस श्रृंखला का पहला किताब 'मेलुहा के मृत्युंजय' (2010) शुरुआत होती हैं शिवजी से, जो कि एक तिबत व्यक्ति है, वे भारत के पश्चिमी भारतीय प्रदेश के सबसे समृद्ध शहर मेलुहा में आते हैं ।

विष का सेवन करने से शिवजी का गला नीले रंग की हो जाती है जिसके कारण ने मेलुहा के शातिर राजा दक्ष उन्हें मलुहा के रक्षक घोषित करता है । वहाँ वे दक्ष की पुत्री सती से मिलता है और उनकी प्रेमिका और बाद में पत्नी बनती है। आगे वह चंद्रवंशीयों के साथ युद्ध करते हैं जिन्हें मेलुहा के सूर्यवंशी शिवजी के सामने बुरे लोग ठहाराते हैं ।

सोमरस के संबंध में राज़ की 'मेलुहा के मृत्युंजय' की मुख्य कथा है । बाकी कहानियाँ इस राज़ से जुड़ी हुई है और इसकी चारों तरफ घूमती हैं । आगे इस उपन्यात में उन्हें नाग वंश के संबंध में पता चलता है जिसे सूर्यवंशी घृणा करते हैं । इस उपन्यास में नाग वंश को बहुत ही क्रूर एवं निष्ठुर दिखाया है क्योंकि सूर्यवंशी लोग शिवजी के समक्ष उस वंश इस प्रकार चित्रित करता है । इस उपन्यास का अंत नाग वंश की एक व्यक्ति द्वारा सती जी पर हमला होने पर खत्म होता है ।

'नागाओं का रहस्य' (2011) इस श्रृंखला का दूसरा उपन्यास है । इसकी शुरुआत शिव जी द्वारा नाग वंश की एक व्यक्ति से सती जी को बचाने से होती है। कई घटनाओं के बाद उन्हें नागवंशी एवं ब्रंगा देश के संबंध में पता चलता है, किंतु जैसे कहानी आगे बढ़ती है शिवजी को एहसास हो जाता है कि नाग वंश के लोग शारीरिक विकृतियों के साथ जन्मे लोग हैं जिन्हें पैदा होते ही सूर्यवंशी जंगल में छोड़ देते हैं । सूर्यवंशी केवल वैसे बच्चों जाते थे जिन्हें पैदाइशी कोई शारीरिक कमिया ना हो और स्वस्थ हो ।

शिव जी का एक बार नाग वंश के साथ लड़ाई होती है और उन्हें इस बात का ज्ञान हो जाता है कि नाग वंश के लोग बहुत ही प्रतिभावान योद्धा है । उस जाति के लोगों के प्रति शिवजी के दिल में सम्मान जागता है । आगे शिव जी काली और गणेश जी से मिलते हैं । शिव जी को पहले गलतफहमी होती है कि गणेश जी ने सती जी का अपहरण करने का प्रयत्न किया था। किंतु बाद में यह सत्य सामने आता है कि गणेश जी असल में सती जी का पुत्र है जिसे नाग होने के कारण जंगल में छोड़ दिया गया था उसी

प्रकार काली जी सती जी की जुड़वा बहन है जिन्हें गणेश जी के समान नागा होने के कारण जंगल में छोड़ दिया गया था। समकालीन भारत के कई समस्याओं एवं मिथकीय कहानियों को मिलाकर अमीश जी ने एक संकीन एवं मनोरंजक कथा बनाने में सफल हुए हैं ।

इस श्रृंखला के अंतिम उपन्यास 'वायुपुत्रों की शपथ' (2013) कैसे शिव जी जैसे साधारण व्यक्ति कैसै अपने सत कर्मों के कारण आगे चलकर ईश्वर बनता है इस बात का जवाब हमें मिल जाता है। राजा दक्ष के इच्छा के विरुद्ध जाकर सही पक्ष को चुनने की वीरता, उनकी सही फैसले, नेतृत्व गुण एवं निडर व्यक्तित्व ने उन्हें सही मात्रा में ईश्वर बनाया । धर्म की इस लड़ाई के दौरान सती जी की मृत्यु हो जाती है । शिवजी क्रोध में आकर दक्ष को मार डालते हैं और देवी अस्त्र से पूरे मेलुहा को जला देते हैं । मेलूहा शहर और उसकी सभ्यता हमेशा के लिए मिट जाता है । अमीशजी इस उपन्यास में धर्मनिरपेक्षता एवं बहुसंस्कृतिवाद पर पाठकों के ज्ञान बढ़ाने के लिए एक मिथकीय कथा के रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है ।

शिवजी पर उपन्यासत्रय में प्रकाशित होने के कुछ वर्ष पश्चात अमीशजी का रामायण पर कथा श्रृंखला की पहली किताब 'राम इक्षवाकु के वंशज' 2015 में प्रकाशित हुआ जो तुरंत ही अमीशजी की रचना संसार के एक और मील का पत्थर साबित हुआ। आगे इस श्रृंखला की दूसरी किताब 'सीता मिथिला की योद्धा' 2017 में और 'रावण आर्यवर्त की शत्रु' 2019 में प्रकाशित हुआ। राम सीता और रावण के दृष्टिकोण से लिखी गयी यह तीनों उपन्यान सीता जी के अपहरण पर आकर खत्म होती है। इस श्रृंखला की दो और उपन्यास भविष्य में प्रकाशित होंगे।

अमीश त्रिपाठी द्वारा लिखित 'भारत का रक्षक महाराजा सुहेलदेव' नामक ऐतिहासिक उपन्यास 2020 को प्रकाशित हुआ था। यह भारत के सबसे प्रसिद्ध शासकों में एक राजा सुहेलदेव की कथा है । मोहम्मद गज़नी द्वारा सोमनाथ मंदिर को तोड़ने से उपन्यास आरंभ होता है और सुहेलदेव इसकी बदला लेने की शपथ खाता है ।

अमीश त्रिपाठी ने दो कथेतर साहित्य के किताब भी लिखी है, पहला है 'अमर भारत: युवा देश, कालातीत सभ्यता' (2017) जिसमें विभिन्न सामाजिक समस्याओं पर हुए भाषण, लेख और बहस का एक संकलन है ।

इसमें भारत की समृद्धि अमर परंपरा एवं संस्कृति की तारीफ किया गया है । इस किताब में मिथक, इतिहास धर्म एवं सामाजिक समस्याएँ नामक भागों में बंटा हुआ है । दूसरा 'धर्म: सार्थक जीवन के लिए महाकाव्यों की मीमांसा' (2020), जो अमीश त्रिपाठी ने अपनी बहन भावना रॉय के साथ मिलकर लिखा है । यह किताब प्राचीन जीवन से लिए दर्शन पर केंद्रित है जो मानव जीवन को शांतीपूर्ण बना सकती है । इसमें धर्म को समझने के लिए महाभारत या रामायण जैसे महाकाव्यों से सबक लिए गए हैं । आधुनिक समय के विभिन्न पात्रों के बीच में वार्तालाप के रूप में यह पुस्तक लिखा गया है । इसमें बौद्धिक वर्ग के लिए कई गहरे दर्शनों का उल्लेख हुआ है ।

2.2.3 **अमीश त्रिपाठी को प्राप्त पुरस्कार व सम्मान**

- ❖ 21st सेंचरी आईकॉन अवॉर्ड, लंदन, 2021।
- ❖ गोल्डन बुक अवार्ड, 2022।
- ❖ लिस्टड एमंग टॉप फिफ्टी मोस्ट पॉवरफुल पीपल बाय इंडिया टुडे, 2019।
- ❖ हॉनरेरी डॉक्टरेट बई झारखंड रॉय यूनिवर्सिटी, 2019।
- ❖ हलो हॉल फैम आफ अवार्ड फॉर लिटररी एक्सलन्स, 2019।
- ❖ जश्न-ए-यंगिस्तान अवार्ड, 2018।
- ❖ उस्ताद बिस्मिल्लाह खान अवार्ड, 2018।
- ❖ कलिंगा इंटरनेशनल ट्रॉली अवार्ड, 2018।
- ❖ डिस्टिंग्विश्ड एलुमिनस अवॉर्ड, 2017।
- ❖ आइकन ऑफ द ईयर पुरस्कार, 2017।
- ❖ रेयमंण्ड क्रॉसवर्ड पापुलर फिक्शन अवार्ड, 2016।
- ❖ दैनिक भास्कर रीडर्स चॉयस अवार्ड, 2016।
- ❖ प्राईड आफ इंडिया, 2014 और 2015।
- ❖ इंडियास फर्स्ट लिटररी पॉप स्टार, 2015।
- ❖ 50 मोस्ट इनफ्लुएंशल यंग इंडियनस, 2015।
- ❖ कम्युनिकेटर ऑफ द ईयर पुरस्कार, 2014।
- ❖ सोसाइटी यंग अचीवर्स अवॉर्ड फॉर लिटरेचर, 2013।
- ❖ मैन ऑफ द ईयर बय रेडियों वण, 2013।
- ❖ सेलिब्रिटीज टॉप 100 लिस्ट।
- ❖ 100 वी.ऐ.पीस आफ इंडिया बई फॉर्बस इंडिया, 2012, 2013, 2014, 2015 और 2017।

निष्कर्ष

इस अध्याय में नरेंद्र कोहली एवं अमीश त्रिपाठी की व्यक्तित्व और सृजन संसार के संबंध विवरण दिया गया है । दोनों लेखकों ने अपनी-अपनी साहित्यिक भाषा के क्षेत्र में सफलता हासिल की है जिनके लेखन कार्य भारतीय साहित्य के मील का पत्थर साबित हुआ है । ऐसे युग में जहाँ लोग अक्सर अपनी संस्कृति और परंपराओं से दूर हो जाते हैं, कोहली जी और अमीश जी ने अपने साहित्यिक योगदान के माध्यम से भारतीयों को उनकी जड़ों से फिर से जोड़ने का प्रयास किया है ।

साहित्यकार नरेंद्र कोहली का निधन 17 अप्रैल 2021 को हो चूका था। जब मैंने अमीश त्रिपाठी से संपर्क करने का प्रयास किया तो वे विलायत में थे। मेरा ईमेल देखकर उनके निजी सहायक से यह उत्तर मिला की अमीश त्रिपाठी जी व्यस्त होने के कारण साक्षात्कार नहीं दे पाएँगे। लेकिन यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे उनकी सहमती एवं बधाई प्राप्त हुई।